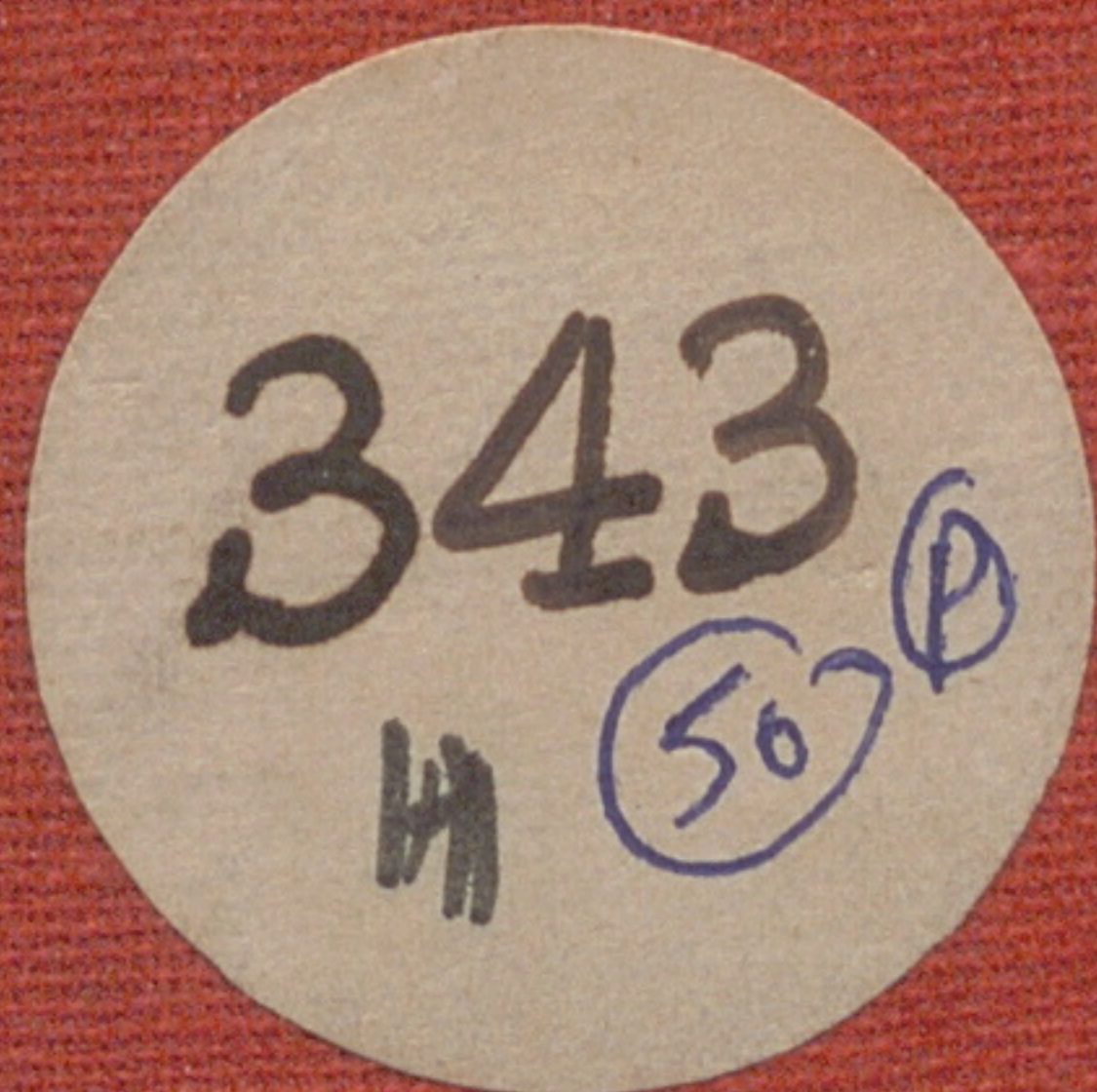
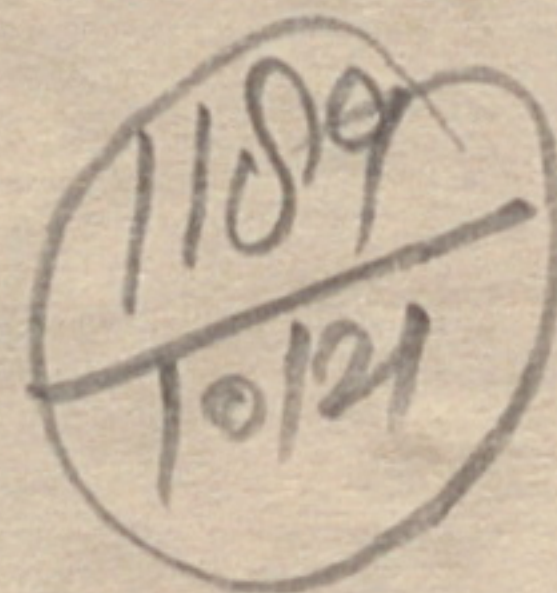




राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi



आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. _____

343

~~2~~
10611

891431
C 3786C

चरखे का तार

मेरे चरखे का टूटे न तार ।
चरखवा चालू रहै ॥

प्रकाशक --- रामदास पांडेय

ग्राम सोनबरसा पो० बरपुर जिला गोरखपुर

मुद्रक --- हिन्दू मित्र प्रेस अलीनगर चौक
गोरखपुर ।

प्रथमवार १०००]

१९३१

[कीमत दो पैसा

मेरे चरखे का टूटे न तार ;

चरखा चालू रहे ॥ टके ॥

बुलहा बनके गान्धी बाबा चलले ।

बुलाहिन बने सरकार ॥ च०चा०॥१॥

वीर जवाहिर बने सहबालिया

इराबिन बने उनका सार ॥ च०चा० ॥ २॥

भारत वर्ष से चले बरतिया ।

लन्दन में पड़े मुकाम ॥ च० चा० ०३॥

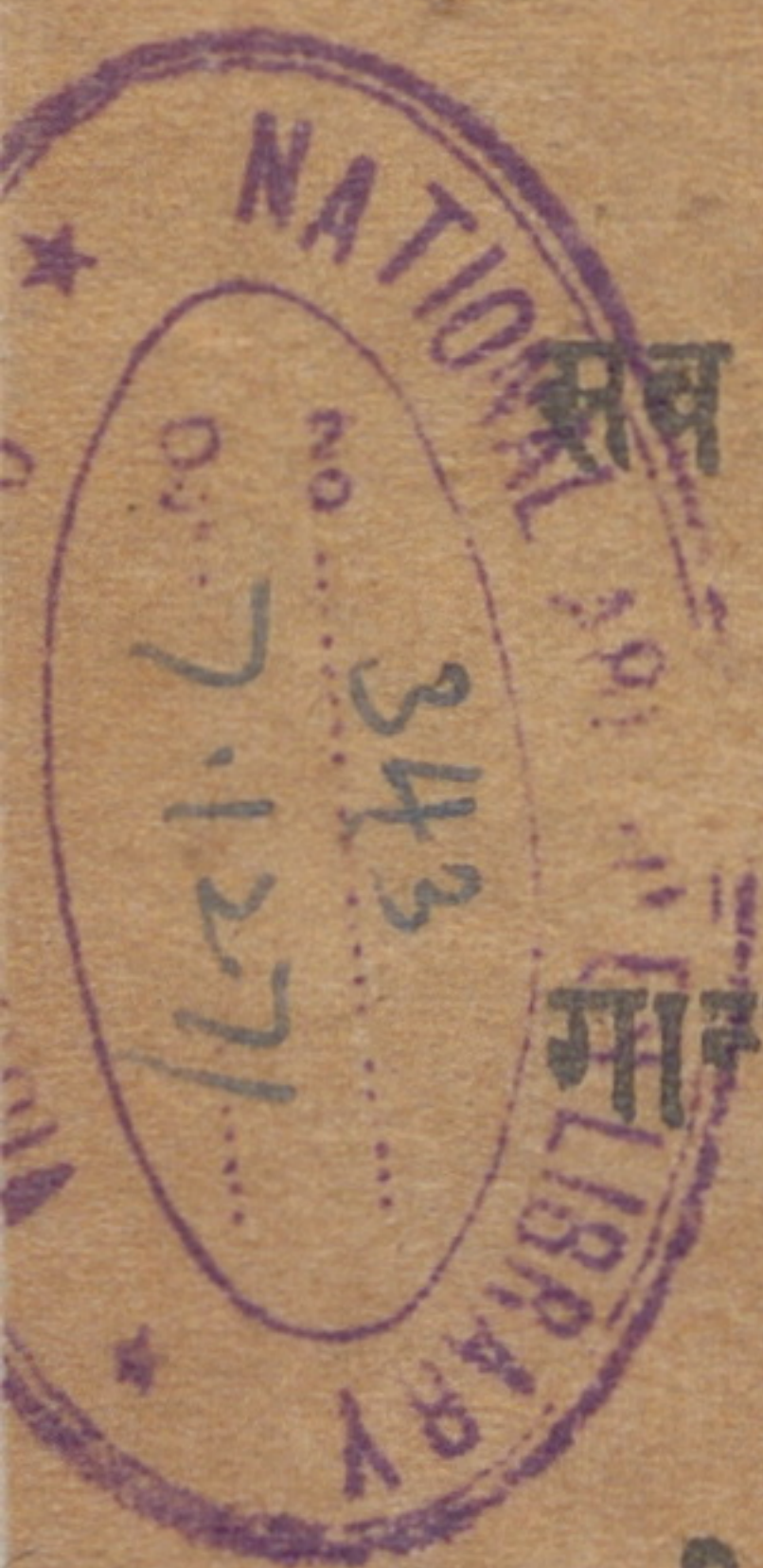
सब बॉलटियर मिलि चले बरतिया ।

अगुआ बने थानेदार ॥ च०चा०॥४॥

गान्धी जी बैठे भाडो मँगन होइ ।

दहेजवा में मांगें स्वराज ॥ च०चा०॥५॥

लार्ड इराबिन चले मनावें ।



गौवना में देवो सुराज ॥ च० चा० ॥ ६

मालवीयजी सोचे गवने के दिनवा

गवने के दिनवा कूआर ॥ च० चा० ॥ ७

करम चन्द गान्धी समधी बनल रहे ।

पंचमजार्ज करे कन्यादान ॥ च० चा० ॥

सन २८ की रिपोर्ट ।

सन २८ की रिपोर्ट पाठक गण तुम्हें सुनाता ।
 कितना माल बिलायत से भारत में हुआ रबाना ॥
 छान्छट लाख रुपयो के इस जगह बूट का आना ।
 देखो दुखित चमार बिचारे रोखे दाना दाना ॥
 साढ़े सत्तर लाख रुपैया का साधुन मगवाना ।
 और बयालिस लाख खिलौने के जरिये धन जाना ॥
 पैतालीस लाख छातो में सही ३ लगवाना— ।
 लिया ४६ लाख का बिस्कुट जरा नहीं शरमाना ॥
 इतर १८ लाख और नब्बे हजार का मनमाना ।
 तैतीस लाख की सूई आई सिये बस्य पुराना ॥

जेब में ४८ लाख की फोन्डेन पैल लगाना ।
 कपड़ा ले १४ करोड़ का जोलहों को तरसाना ॥
 सही में १७ लाख की गोला पैचक है लदवाना ।
 चश्मा २८ लाख का छांखों पै डट जाना ॥
 कई किस्म की घड़ियों में है दस करोड़ लुटवाना ।
 २५ लाख की फिटनों पर भाते जाते रोजाना ॥
 १३ लाख की छड़ी मगा कर हाथों में लटकाना ।
 ७ लाख का बटन लगाते कुरतो में धनवाना ॥
 दीपक के बड़ले में २५ लाख का लेम्प जलाना ।
 एक करोड़ ४० लाख चूड़ी में है लुटकाना ॥
 इन्हीं फजूल खरचों से भारत हो गया बीराना ।
 २४ हजार पौन्ड का पंजा कमरों में फहराना ॥
 द्वाद्व लाख पौन्ड का कपड़ा सीने की कल भाना ।
 जितने हैं जयचन्द उन्हें बन्दर का नाच नखाना ॥
 सेक्रेण्ड हैंड कोट पतलूनों का जहाज लद भाना ।
 लगभग तीस करोड़ रुपयों का उतरन मनमाना ॥
 ७० लाख की कुर्सी मेजों पर पेश उड़ाना ।
 हैंड बेग में २३ लाख रुपयों का बूथा फसाना ॥
 ४२ कौड़ ४५ लाख मदीरा में किया रवाना ।
 देख बशा भारत की भाई हमको पड़ा सुनाना ॥
 सुना पड़ा देश भारत लम्हून का भरा खजाना ।

लाखों भाई भूकों मरते जरा न दिल शर्मना ॥
 महात्मा गांधी के कहने पर बीजे अब ध्यान ।
 होना जो चाहें स्वाधीन तो छोड़ो सभी पहाना ॥
 साबुन सूई तेल, चटन इतरी कों वही बनाना ।
 शुद्ध स्वदेशी तारों का ही होवे ताना बाना ॥

सरदार भगत सिंह

हम नागों का दिलदार था सरदार भगत सिंह ।
 दुश्मन के लिये था खड्जर की वो धार भगत सिंह ॥
 घांका था वीर लड़ाका था शेर बबर दिल ।
 फिर दुश्मन का था एक ही बाज़ार भगत सिंह ॥
 वीरो में वीर राजगुरु सुखदेव भी रहे ।
 था क्रान्ति का सच्चा सिपहसालार भगत सिंह ॥
 थानों में लाल परचा बेखौफ लगाता ।
 पर गान्धी के कहने पे हुआ लाचार भगत सिंह ॥
 दम केश में पकड़ा गया हाकिम से कहा यों ।
 मरने कों सीना खोल खड़ा तैयार भगत सिंह ॥
 गाली से उड़ावो मगर फाँसी न लगाओ ।
 फाँसी से ही लाचार है सरदार भगत सिंह ॥
 उन ज़ालिमों ने शेर की फर्याद न सुनी ।
 कर लिया फाँसी गले का हार भगत सिंह ॥

नकटा

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न हमार ॥

मोर पिया मरि मरि खेति उपराजे सखि ,

मजा उड़ावे इहा मेम कै भतार ।

मोर पिया भरि पेट सतुआ के नाहीं पावे ,

माले मित खाले देखी मेम कै भतार ।

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न हमार ॥

मोर पिया पुध दही घीव के दुलमवा भइले ,

झोआ उड़ावे इहा मेम कै भतार ।

मोर पिया दस में सिपाही बनि देश जीते ,

लाट बनि लाख लेलै मेम कै भतार ।

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न हमार ॥

मोर पिया भुइयां २ राति वो बिराती धावै ,

हवागाड़ी पर चलै मेम कै भतार ।

इहै सब दुख गांधी बाबा बतावत बानी ,

यही से चिहंत बाड़े मेम कै भतार ।

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न हमार ॥

केतने के पति सखी पही से मारल गइलै ,

कितने के कैद कइलै मेम कै भतार ।

अलियान बाण दुख सुनि के कलेजा फाटे ,

इशु से डरैले ना मेम कै भतार ।

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न।हमार ॥

केतने के पति मागी सेबुरा के धोइ देलै ,

बिपती के भार दिहले मेम के भतार ।

केतने के पुत्र मारि गोदवा के सुन कइलै ,

दुखिया बनवलै उन्हे मेम के भतार ।

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न हमार ॥

गांधी जी दुखित भईलै न्याय के पुकारा कइलै
सुनि सुनि हली करै मेम के भतार ।

असहयोग तब गांधी जी चलार्इ दिहली ,

अब रोके धार्इ धार्इ मेम के भतार ।

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न हमार ॥

पति के सिखाऊ सखि कैव से डरै मति ,

कितनो डरावै उन्हे मेम के भतार ।

अपने चलाऊ सखी चर्खा के रात दिन ,

सहो जेते दुख देले मेम के भतार ।

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न हमार ॥

गाढ़ा पहिरि गाढ़ प्रेम आपस में करु सखी ,

कितनो फुटकावे तोहे मेम के भतार ।

माधोजी बिनय करै गांधी जी कै बात मानु ।

भाई सम जान सखी मेम के भतार ।

स्वराज लिये बिनु दुख छुटी न हमार ॥

हिन्दी की कुछ चुनी हुई पुस्तकें

गांधी टोपी	१ पैसा	भारतीय राजस्व	॥१॥
माया का लोभी भाव	१,,	आरोग्य साधन	१८)
हम घर-२ तमक बनायेगे	१,,	(म० गांधी)	
नई दुनिया	१)	दुनी भारत	५)
जवाहिर सन्देश (ज३३)	१)	मृत्यु विजयी यतीन्द्र	
मोती की खान	१)	नाथ दास	१)
कराची कांग्रेस	१)॥	पं० मोती लाल नेहरू	१)
माखन चौर तमकचौर	१॥	पं० जवाहरिलाल नेहरू	१)

नोट— थोक मगाने से कराची कांग्रेस ३=), नई दुनिया २) जवाहिर सन्देश (ज३३) ३६, मोती की खान १८), गांधी टोपी ॥१॥, माया का लोभीभाव ॥१॥, हम घर घर तमक बनायेगे ॥१॥, माखन चौर तमकचौर १), चरखे का तार १), सैकड़ा मिलेगा माखन मगाने का कुल खर्च पैकिंग पोस्टेज वगैरह जिम्मेकारीदार के होगा ।

पुस्तक मिलने का पता— राजमन्वन त्रिपाठी बुकसेलर
तहसिल देवरिया जिला गोरखपुर ।